P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-II*October-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

साकेत महाकाव्य के नवम्सर्ग में उर्मिला का चारित्र्य वैशिष्ट्य

गौरी अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय नवीन कन्या
महाविद्यालय,
रायपुर, छ0ग0

राधाबाई
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय नवीन कन्या
महाविद्यालय,
रायपुर छ0ग0

सारांश

मैथिलीशरण गुप्त खड़ी बोली के पहले महान कवि हैं। जयद्रथ वध, पंचवटी, यशोधरा, भारत भारती–और साकेत उनकी अविस्मरणीय कृतियॉ हैं। साकेत खडी बोली का प्रथम महाकाव्य हैं, इस महाकाव्य की सर्वाधिक आकर्षक झॉकी नवम्सर्ग में उपस्थित है। मुक्तक शैली में विकसित इस सर्ग की विरहिणी नायिका उर्मिला का उदात्त चरित्र भारतीय नारी के लिये प्रेरणास्पद एवं हृदयग्राही है।

मुख्य शब्द : वैशिष्टय, चेतना, राष्ट्रीय धारा, उपेक्षिता।

प्रस्तावना

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी के साहित्य में राष्ट्र का समूचा इतिहास, भूगोल, धर्म, सामाजिक परिवेश, राजनितिक, परिप्रेक्ष्य समाहित है। उनकी श्रेष्ठ कृति ''साकेत'' महाकव्य में राष्ट्रीयता का सतसंकल्प निहित है। यह महाकाव्य समस्त भारतीय जीवनादर्श के विस्तार का उद्घोष है। सत्यनिष्ठा, वचनबध्दता, आतिथ्य धर्म, पतिव्रत, एक पत्नीव्रत, परदुखकातरता, लोक मर्यादा आदि इस महाकाव्य के जीवन तत्व हैं।

सर्वे सुखिनः सन्तु की कामना को लेकर यह महाकाव्य आध्यात्म, भक्ति, धर्म और दर्शन का समन्वय कर जीवन को उदात्त मूल्यों की ओर प्रेरित करता हैं। रामकाव्य की सहस्त्रों वषा की परम्परा को नये धरातल पर प्रस्तुत कर साकेतकार ने जीवंत और युग सापेक्ष बना दिया। साकेत के रचनाकार गुप्त जी ने रामकथा के उन मार्मिक स्थलों से साहित्य जगत का संबंध स्थापित कराया जिनका अन्य पारम्परिक पूर्ववर्ती रामकाव्य में दर्शन नहीं हो पाया था। इन मार्मिक स्थलों में प्रमुख हैं साकेत का नवम्सर्ग और उसमें भी नायिक, उर्मिला के चरित्रगत वे वैशिष्टय हैं जो भारतीय संस्कृति का पूर्णतः प्रतिपादन करते हैं। वैसे भी ''साकेत'' महाकाव्य के पीछे दो निबंधों की प्रेरणा हैं, जिसमें प्रथम कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ जी का काव्य की उपेक्षिताएं एवं द्वितीय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का ''कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता हैं।

इसलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपनी कृति हिन्दी साहित्य का इतिहास में यह मत रखा है कि साकेत की रचना का उद्देश्य ही यह रहा है कि काव्य जगत में उर्मिला उपेक्षित न रह जाए। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का भी यह मानना था कि उर्मिला को नायिका बनाने हेतु ही साकेत में नवम्सर्ग की रचना हुई है। इन सभी तथ्यों से यह पुष्ट होता है कि उर्मिला का चरित्र साकेत के माध्यम से साहित्य अध्येताओं के लिए चिंतन और शोध का विषय अवश्य रहा है।

जिस समय साकेत के नवम्सर्ग की रचना हो रही थी उस समय नवजागरण और जनतांत्रिक आंदोलन के तहत नारी की मुक्ति, चेतना, मर्यादा, शौर्य, उत्सर्ग आदि को लेकर भी साहित्य की रचना हो रही थी। सभी रचनाकार संस्कृति की रक्षा और उन्नति के लिए नारी सम्मान का अपनी रचना का विषय बनाकर पूरे राष्ट्र के लिए संदेहवाहक बनकर राष्ट्रीय धारा से जनजीवन को सम्बद्ध करने का अभूतपूर्व प्रयास कर रहे थे।

ऐसे समय में साकेत महाकाव्य के नवम्सर्ग की नायिका उर्मिला का चरित्र नारीजगत के लिए मील का पत्थर बन राह का पथ प्रदर्शक अधिक सुगम आर ग्राहय हुआ है। साहित्य जगत की यह चिर उपेक्षिता उर्मिला यहां मुखर और सभी पात्रों के मध्य प्रखर हुई है। उसका चारित्रिक विकास पारिस्थितिक घात–प्रतिघात से होते हुए त्याग वृत्ति के सिंहासन पर आरूढ हो साकेत के अन्य सभी पात्रों को सहज रूप से प्रभावित करता चलता है। उर्मिला के चौदह वर्षो की कसक, टीस एवं वेदना की संवेदना से सभी पात्र कारूणिक हो उठे है।

उर्मिला का प्रवेश साकेत में शील सौरभ से संयुक्त स्वर्गिक कृति के रूप में होता है– ''स्वर्ग का यह सुमन धरती पर खिला । वह प्रेममयी है। विरह व्यथा से व्याप्त नवम्सर्ग में यह विषादमयी, करूणे, रूदंती, विरहिणी, सती आदि से संबोधित हुई हैं। स्नेह, दुलार एवं चंचलता से परिपूर्ण कैशौर्य जनक जैसे पुण्यदेही पिता का वात्सल्य जो सौ पुत्रों से भी अधिक मिला है– उर्मिला की वियोगदशा भावावेग के साथ मुखरित हुआ है। उर्मिला आद्यांत वियोग की इन परिस्थितियों के अपनी चारित्र्य वैशिष्टय के कारण आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। प्रमुख रूप से उसकी त्याग की भावना ने उसे वहां बिठाया है, जहां सीता भी न जा पाई। इस त्यागकृति के लिए सीता का यह कथन सार्थक सिद्ध होता है–

सास–ससुर की स्नेहलता
बहन उर्मिला महाव्रता
सिद्ध करेगी वही यहां
जो मै भी कर सकी कहां ? (1)

इस त्याग के पीछे मुख्य कारण है लक्ष्मण के कर्तव्य पथ को अपना पथ मानकर भातृ–स्नेह सुधा–हेतु अपना जीवन न्यौछावर कर देना है। त्याग की इस तपस्या से जीवन कंचन के समान निखर कर प्रकाशित हो रहा है। त्याग की भावना उस समय सीमा से पार कर जाती है जिस समय चित्रकूट में सीता के सौजन्य से लक्ष्मण के साथ उसकी भेंट होती है तो वह लक्ष्मण को रोकने का कोई प्रयत्न नहीं करती वरन् उसे स्वतंत्र करती हुई कह उठती है–

मेरे उपवन के हरिण, आज वनचारी ।
मै बांध न लूंगी तुम्हें तजो भय भारी। (2)

अपूर्व त्याग के समक्ष वह लक्ष्मण से एकदम आगे निकल जाती हैं। उर्मिला के इस चरित्र में डूबकर गुप्त जी ने संयुक्त परिवार का आदर्श, उसकी निष्ठा को व्यक्त करना चाहा है। उर्मिला का यह त्यागमयी चारित्रय वैशिष्टय गुप्त जी को संयुक्त परिवार की ओर ले गया। प्रेमचंद के ''गोदान'' में होरी की पीडा भी यही थी कि उसका संयुक्त परिवार टूट रहा है। हर संभव वह इस संयुक्त परिवार की मर्यादा को रक्षित करने का प्रयास करता है। साकेत के सभी पात्र संयुक्त परिवार के प्रति निष्ठा से मर्यादा का पालन करते दिखाई देते हैं।

गुप्त जी, इसका प्राणपन से रक्षा करने में समर्थ हुए हैं। संस्कृत महाकवि भवभूति ने अपने उत्तररामचरितम् नाटक में सीता को प्रतिष्ठित किया हैं– तो गुप्त जी ने साकेत क नवमसर्ग में उर्मिला को इस संदर्भ में यह कथन प्रासंगिक है– ''इस काव्य का समापन उर्मिला लक्ष्मण मिलन से हुआ है लेकिन वह उनके संयुक्त परिवार के लिए किए गए उच्चतर त्याग के कारण। (3)

यह उर्मिला के चरित्र का विशिष्टता ही है कि विरह की अतिशयता में भी वह किसी अन्य का दुख देना नहीं चाहती और न ही दुखी देखना। विरह में उर्मिला, तिल तिल करके जल रही है परंतु उसका हृदय अत्यंत उदार हो सबके प्रति सहानुभुति का भाव रखती है। चाहे मनुष्य या मानवेतर प्राणी या वृक्ष लताएं हो। वह मालिनो को आदेशित करते हुए कहती है–

सीचें ही बस मालिने, कलश ले, कोई न ले कर्तरी। (4)

वह आगत का स्वागत करती हुई कहती है–

स्वागत, स्वागत, शरद, भाग्य से कैसे दर्शन पाये। (5)

इस तरह वह विरह की अतिशयता से दो दो हाथ करती है। उसका शरीर विरह से कातर, दुर्बल हो चुका है, परंतु मन का संयम उसके चरित्र की पावनता और दृढता की गहराई को प्रकट करता है। तभी तो वह कामदेव की चुनौती देते हुए कहती है–

नहीं भोगनी यह मैं कोई , तो तुम जाल पसारो।
बल हो तो सिंदूर, बिंदु यह हर नेत्र निहारो।
रूप दर्प कदर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर वारो। (6)

उर्मिला विरह के कारण शोक उन्माद, संताप, प्रलाप, विभ्रम, जडता, उद्वेग, अनिद्रा, अनशन, आदि से ग्रस्त होने के बाद भी दृढता के साथ कर्तव्य की भावना से कभी भी स्खलित नहीं होती। उसके जीवन में अपने परिवार के हित के लिए कर्तव्य से बढकर कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है। स्वाभिमानी उर्मिला आत्मविश्वास से परिपूर्ण है– आशान्वित है और सभी देवियां से आगे

डूब बची लक्ष्मी पानी में, सती आग में पैठ।
जिये उर्मिला, करे प्रतिक्षा, सहे सभी घर बैठे।(7)

वह विरहिणी के विषय परिस्थितियां में व्याकुल आकुल नहीं होती बल्कि आदर्श पतिव्रता वीरांगना हो पारम्परिक विरहणो नायिकाओं से एकदम अलग छवि भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि पर स्थापित करती है। साकत की सेना के साथ उर्मिला का पुरुष वेश में इस क्षेत्र में जाने की ललक, सेवाभाव का संकल्प, ग्रामवासियों, कृषकों, प्रोषित, पत्रिकाओं आदि की कुशल कामना व्यक्त करण गांधी वादी आदर्श है। मैथिलीशरण गुप्त जी ने विरह से व्यथित इस नारी के माध्यम से अपना गांधीवादी आदर्श को व्यक्त किया है और उर्मिला को राजपरिवार से निकाल कर वसुधैव कुटुम्बकम् अग्रसर करने में सक्षम हुए है।

गुप्त जी मानवतावाद और लोककल्याण में आस्था रखते हैं। नवम्सग में यद्यपि उन्होनें उर्मिला की विरहाकुल स्थिति का चित्रण किया है पर लोकमंगल की भावना को वे विस्मृत नहीं कर सके हैं। उर्मिला के द्वारा उन्होंने अपने कल्याणकारी विचारों की अभिव्यक्ति की है। उर्मिला अपनी विरह दशा के कारण किसी पर कुपित नही होती। नन्ही–सी मकड़ी के प्रति भी वह दया दिखाती है– अपनी आदर्श मर्यादा का पालन करती दिखाई देती है। अपने आदर्श का पालन करने के कारण उसका चरित्र महान ही नही महानतम् है। उसकी इस महानता को राम की मान्यता प्रदान करते है–

तूने तो सहधर्मचारिणी के उपर
धर्म स्थापना किया भाग्यशालिनी, इस भू पर।(8)

वास्तव में उर्मिला घर में जलाये गये उस आशापूत दिव्य शिखा की भांति प्रज्जवलित हैं जो दूर देश गामी पुरुषों को प्रकाश प्रदान करने की कामना का प्रतीक है। उर्मिला में जितना रूदन है उतनी करूणा, जितनी अवरूद्ध है उतनी मुक्त है, जितनी रहस्यमयी है, उतनी ही उजागर है, फिर उसकी वीरत्व, रमणित्व ने तो एक अलौकिक दीप्ति उपस्थित कर दी है। उर्मिला की ज्योति तो

घर–घर जलायी जा सकती है। उर्मिला का जीवनवतृत साकेत की अधुनातन उपलब्धि है।

उर्मिला के चरित्र में सांस्कृतिक बोध का व्यापक रूप से वर्णित है। उसमें विरह जनित दस दशाओं अभिलाषा, चिंता, स्मृति, गुण कथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जडता और मरण के मध्य समस्त भारतीय जीवन आदर्श सन्निहित है – जैसे सत्यनिष्ठा, वचन बध्दता, आतिथ्य, धर्म, पतिव्रत, परदुखकातरता इत्यादि। उर्मिला में ये सारी विशिष्टताएं नवम्सर्ग में दृष्टिगोचर होती है। वे अपनी विरह वेदना में समाज, परिवार की सत्ता को ही सर्वोपरी समझती है। अपने हित को समाज के हित में देखती है। उर्मिला नारी जगत के लिए एक समग्र व्यक्तित्व के रूप में उपस्थित है। उसका चरित्र उन नारियों क लिये प्रेरणास्पद है जो विपत्तियों में अपने को अबला समझती है। अपने अस्तित्व को नकार देती है या हथियार डाल देती है।

मैथिलीशरण गुप्त जी ने साकेत में उर्मिला के चरित्र को रचकर तात्कालीन परिस्थितियों में नारी के प्रति अवमानना के स्थान पर समस्त अकस्त मानवीय गुणों से भरपूर मनुष्य की कल्पना करके उसके प्रति आदर की भावना को जागृत किया है। उर्मिला मैथिलीशरण गुप्त जी की दृष्टि एवं सृष्टि है। उसे भारतीय सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि पर प्रतिष्ठित किया है।

वह सामान्य नारी की भांति विरहिणी बन रूदन, अनिद्रा, अनशन, जीर्णशीर्ण परिधान, पश्चाताप पूर्व वृत्त , स्मरण, आत्म प्रक्षेपण, मानसिक दौर्बल्य, आत्मदैन्य, उनमाद, स्वप्निल संयोग तीव्र, अन्तर्द्वन्द्व, अनिष्ट आशंका, विनम्र, विक्षिप्तावस्था और आत्मिक उथल पुथल के मार्ग से प्रस्थान हो उदात्त कर्तव्य, पूर्णतः संयम, त्याग और आत्मविश्वास के आकाश का निहारते हुए रघुकुल के गौरव गाथा की विशिष्ट पात्र है– वह साकेत की धरोहर है।

संदर्भ ग्रंथ

1. 1,2,4,5,6,7,8,–साकेत–मैथिलीशरण गुप्त 2012 पृष्ठ –57, 141, 144, 163, 172, 189, 182
2. 3–मैथिलीशरण–नंदकिशोर शुक्ल–राजकमल प्रकाशन 2011